International Journal of Scientific Research in Science and Technology
Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X (www.ijsrst.com)
doi : https://doi.org/10.32628/IJSRST

कबीर साहित्य में तार्किकता एवं अन्वीक्षण का अध्ययन

देवलाल साहू शोदार्थी
डॉ. अजय शुक्ला शोध निर्देशक
कलिंगा विश्वविद्यालय कोटनी रायपुर छ.ग.

Article Info

Volume 8, Issue 5

Page Number : 55-59

Publication Issue

September-October-2021

Article History

Accepted : 05 Sep 2021

Published : 10 Sep 2021

सद्गुरू कबीर धर्म – क्षेत्र के वैज्ञानिक हैं। आज से पांच सौ वर्ष पूर्व कही गयी उनकी बातें कहीं विज्ञान से टकराती नहीं हैं, किन्तु विज्ञान की कसौटी पर खरी उतरती हैं। धर्म के नाम पर उन्होंने कहीं भी अन्धविश्वास, चमत्कार, पाखण्ड एवं अतिश्योक्तिपूर्ण बातों का समर्थन नहीं किया, बल्कि वे जीवनपर्यंत उनकी आलोचना करते रहे तथा लोगों को इनसे सावधान करते रहे। धर्म के नाम पर कही गई कार्य – कारण – व्यवस्था से रहित, विवेकविरूद्ध, अवैज्ञानिक बातों को आंख मूंदकर मानने के बजाय उन्होंने अन्वीक्षण, परीक्षण एवं परख पर जोर दिया और कहा कि बिना परीक्षा के, बिना परख किये किसी बात को स्वीकार लेने से मनुष्य का पतन है।

साहु चोर चीन्है नहीं, अंधा मति का हीन।
पारख बिना विनास है, कर विचार होहु भीन।।

अर्थात अविवेकी बुद्धिहीन मनुष्य सत्यज्ञान के धनी सद्गुरू और ज्ञान – विवेक, सुख–शांति का हरण करने वाले चोर – मन एवं भ्रमित गुरूओं को नहीं पहचानता। पहचान के बिना विनाश है। अतः विवेक–विचारकर चोर – मन एवं भ्रमिक गुरूओं को पहचान उससे पृथक हो जाओ।

इस धराधाम पर समय–समय पर ऐसे महापुरूष होते रहे हैं जिन्होंने परम्परा, शास्त्र एवं भीड़ की परवाह न कर अन्वीक्षण – परीक्षण को सत्य प्राप्ति का मार्ग बताया तथा स्वयं इसी का अनुसरण किया। सत्य के अनुसंधान के लिए परम्परा, जनसमूह एवं शास्त्र की नहीं, किन्तु अन्वीक्षण–परीक्षण की

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

आवश्यकता है। जिस किसी ने जब कभी सत्य को पाया है, अन्वीक्षण – परीक्षण के आधार पर पाया है।

यद्यपि हर मनुष्य अपनी परम्परा, जनसमूह, धर्मशास्त्र आदि से बहुत कुछ सीखता – समझता है। इनसे एक दिशा मिलती है। परन्तु सत्यान्वेषण के लिए ये ही पर्याप्त नहीं हैं। शास्त्र– प्रमाण को सर्वथा नकारा नहीं जा सकता, किन्तु सत्यान्वेषण के लिए शास्त्र–प्रमाण की अपेक्षा अन्वीक्षण – परीक्षण एवं तर्क ज्यादा उपयोगी हैं। वेदांतसूत्र तथा महाभारत में क्रमशः यह भले कहा गया है कि – "तर्काप्रतिष्ठानात्" (वेदान्त सूत्र 2–1–11)तथा "तर्कोऽप्रतिष्ठः" (महाभारत, वनपर्व 313/117) अर्थात तर्क का कोई ठिकाना नहीं, किन्तु वेदों

के अर्थ को स्पष्ट करने कि लिए लिखे गये निरूक्त जैसे पुरातन और प्रसिद्ध ग्रंथ में सत्यान्वेषण के लिए तर्क की ही महत्ता बतायी गयी है –

मनुष्या वा ऋषिषूत्क्रामत्सु देवानब्रुवन् को न ऋषिर्भविष्यतीति। तेभ्य एतं तर्कमृषिं प्रायच्छन्।।

(निरूक्त परिशिष्ट)

अर्थात सत्य और धर्म को बताने वाले ऋषियों के काल के समाप्त होने पर मनुष्यों ने देवों से पूछा कि अब हमारा ऋषि या मार्गदर्शक कौन होगा। तब देवों ने मनुष्यों को तर्क रूपी ऋषि को दिया।

यहां तर्क का अर्थ अन्वीक्षण, परीक्षण एवं परख करना ही है। सत्य तक पहुंचने के लिए तर्क एवं अन्वीक्षण की महती आवश्यकता है, इससे कोई इंकार नहीं कर सकता है। तर्क एवं अन्वीक्षण शास्त्रों के परस्पर विरूद्ध बातों को समझने एवं असत्य को त्यागकर सत्य को स्वीकार करने का मार्ग प्रशस्त करता है। तर्क की प्रशंसा करते हुए कहा गया है –

मोह रूणद्धि विमलीकुरूते च बुद्धिं
सूते च संस्कृतपदव्यवहारशक्तिम्।
शास्त्रान्तराभ्यासनयोग्यतया युनक्ति
तर्क श्रमो न तनुते किमिहोपकारम्।

(सुभाषित रत्न भाण्डागरम्)

अर्थात तर्क मोह को दूर करता है, बुद्धि को विमल करता है, वाणी को परिष्कृत करता है तथा शास्त्रों को समझने के लिए बुद्धि को समर्थ करता है। तक कौन – सा उपकार नहीं करता। प्रश्न उठता है कि तर्क क्या है ?

"तर्क या चिंतन, मानसिक क्रिया का ज्ञानात्मक पहलू है या मन की बातों से संबंधित मानसिक क्रिया है"। **– रास**

"तर्क उस समस्या को हल करने के लिए अतीत के अनुभवों को सम्मिलित रूप प्रदान करता हे जिसको केवल पिछले समाधानों का प्रयोग करके हल नहीं किया जा सकता है"।

– मन

"तर्क फलदायक चिंतन है, जिससे किसी समस्या का समाधान करने के लिए पूर्व अनुभवों को नई विधियों से पुनर्संगठित या सम्मिलित किया जाता है"।

– गेट्स व अन्य

मूस बिलाई एक संग, कहु केसे रहि जाय।
अचरज एक देखो हो संतो हसती सिंधहि खाय।। रमैनी साखी 72

साखी के सामान्य अर्थ में चूहा और बिल्ली एक साथ कैसे रह सकते है चूहा तो बिल्ली का भोजन है। इसी प्रकार हाथी और सिंह एक साथ कैसे रह सकते है क्योंकि हाथी सिंह का भोजन है। यह अचरज की बात है। परन्तु विशेष अर्थ में जीव माया में आशक्त होकर कैसे खुशी हो सकता है ? जीव माया से सबल और ताकतवर होते हुए भी माया मे आशक्त होकर काल और दुःख दुर्दशा का कारण है। यानी मायासक्ति के कारण मन सबल जीव को भ्रमित कर रहा है।

जाग्रत नहीं रहने के कारण आत्मा को अनेक प्रकार के भ्रम होता है जो निम्नानुसार दृष्टिगोचर होता है।

बिन देखे वह देस की, बात कहे सो कूर।
आपुहिं खारी बात है, बेंचत फिरें कपूर।।34।।
भौर जाल बगुजाल है,बूड़े बहुत अचेत।
कहें कबीर ते बाचि हैं, जाके हिद्या मांहि विवेक।।92।।
मन सायर मनसा लहरि, बूड़े बहुत अचेंते।
कहै कबीर तै बाचि है जिनके हिरदै विवेक।।107।।
रतन का तू जतन कर, माटी, का सिंगार।
आया कबीरा फिरिगया झूठा है संसार।।114।।
हीरा सोई सराहिए, सहै धनन की चोट।
कपट कुरंगी मानवा, परखत निकरा खोट।।168।।
भरम बढ़ा तिहुँ लोक में, भरम मंडा सब ठांव।
कहै कबीर पुकार के तुम बसेउ भरम के गॉव।।259।।

सद्गुरू कबीर अपने युग के अन्वीक्षण विद्या के आचार्य हैं। उन्होंने कभी न तो आंख मूंदकर किसी का समर्थन किया न ही किसी का विरोध। सत्य को सत्य कहने में तथा झूठ कहने में उनहें रंचमात्र भय नहीं था। धर्म, दर्शन, अध्यात्म, व्यवहार, लोकनीति, समाज, सभी

विषय में उनकी दृष्टि अत्यन्त साफ थी और सभी विषय पर बेलाग होकर उन्होंने अपनी बातें कहीं हैं। इतना होने पर भी उन्होंने यह कभी नहीं कहा कि मेरी बातों को बिना विचार किये मान लो, किन्तु वे कहते हैं– मैं सत्य का उपदेश दे रहा हूॅ, तुम स्वयं अपने हृदय में विचारकर देखों कि ये सत्य हैं या नहीं। जो स्वयं किसी बात को बिना विचार किये आंख मूंदकर नहीं मान सकता वह दूसरों को अपनी बातों को बिना विचार किये आंख मूंदकर मानने की राय कैसे दे सकता है। अन्वीक्षण – परीक्षण का अर्थ ही है किसी भी बात की स्वीकृति–अस्वीकृति विचारपूर्वक हो, आंख मूंदकर नहीं।

तार्किक एव अन्वीक्षण के लिए व्यक्ति किसी को स्वतः प्रमाण नहीं मानता। वह प्रत्येक विषय – वस्तु को ठोंक–पीटकर देखने–समझने पर बल देता है। जो बातें केवल धार्मिक विश्वास, आस्था और परम्परागत रूढ़ियों से चली आ रही हैं और इनके बल पर जीवित हैं आन्वीक्षिकी व्यक्ति उनकी अच्छी तरह से शल्य क्रिया करता है और विवेकपूर्वक ही उन्हें स्वीकार करने की राय देता है। जो बिना विचार किये किसी बात को इसलिए स्वीकार कर लेता है कि वह बहुत बड़े धर्मशास्त्र में लिखी गयी है या वह किसी बड़े कहे जाने वाले पुरूष द्वारा कही गयी है या बहुत बड़ी भीड़ उसका समर्थन कर रहीं है, अन्ततः उसे धोखा खाना पड़ता है। सद्गुरू कबीर कहते है उसकी दशा तो उस व्यापारी की तरह होती है जो अधिक लाभ की आशा में अपनी मूलधन भी खो बैठता है। यथा –

खरा खोट जिन नहिं परखाया। चाहत लाभ तिन्ह मूल गमाया।। (बीजक रमैनी 70)

आन्वीक्षकी विद्या का उपासक पारखी व्यक्ति कभी भ्रम या धोखे में नहीं पड़ता। वह सदैव खोजी होता है और जो खोजी होता है, वह कभी भूल–भ्रम में नहीं पडता। कबीर साहेब कहते हैं– "करै खोज कबहॅू न भुलाई।" आन्वीक्षकी एवं पारखी मोक्ष और परमतत्व को परोक्ष में नहीं खोजता, किन्तु वह यह जानता है कि मोक्ष और परमतत्व तो मेरा अपना ही स्वरूप है। जो अन्वीक्षण एवं परख की अवहेलना करता है, वह अपने लक्ष्य को बाहर खोजता है, इसलिए न वह कभी स्थिर हो पाता है और न उसकी भूल मिट पाती है, उसकी यह भूल तो तभी मिटेगी जब उसे आन्वीक्षकी एवं पारखी गुरू मिलेंगे और उसे अन्वीक्षण – परख का उपदेश देंगे, क्योंकि सभी भूल – रोग की औषध अन्वीक्षण एवं परख ही है। यथा–

भूल मिटै गुरू मिलैं पारखी, पारख देहिं लखाई।
कहहिं कबीर भूल की औषध, पारख सबकी भाई।। – बीजक शब्द – 115

सद्गुरू कबीर साहेब द्वारा रचित उलटवांसियां तो तार्किक क्षमता विकास में विशेष रूप से मानव को सहयोग प्रदान करता है। उलटवांसियां का अपना एक विशेष अर्थ होता है जो बिना तर्क किये समझ में नहीं आता यथा–

सो नैया बिच नदिया डूबी जाय।
एक अचम्भा हमने देखा, गदहा के दो सींग।
डसके गले में रस्सा बांधा, खैंचत अर्जुन भीम।।
एक अचम्भा हमने देखा, कुऑ में लागी आग।
कीचड़ कांदो सबही जरिगा, मछली खेलै फाग।।
एक अचम्भा हमने देखा, बंदर दूहै गाय।
दूध दही सब अपना खावे, घियना बनारस जाय।।

उपर्युक्त विवरणों के आधार पर हम कह सकते है कि सद्गुरू कबीर साहेब द्वारा रचित साखी, रमैनी, सबद और उलटवांसियां से तार्किक क्षमता का विकास होता है और पाठक के ज्ञानवर्धन में अद्भूत रचना है।

शोध साहित्य ग्रंथ

1. विवके प्रकाशिनी बीजक टीका – साध्वी ज्ञानानंद, प्रकाशन – श्री कबीर ज्ञान प्रकाशन केन्द्र संत कबीर ज्ञान मार्ग सिहोडीह, सिरसिया गिरिडीह झारखंड
2. सद्गुरू कबीर और पारख सिद्धांत – धर्मेन्द्र दास, प्रकाशक – कबीर पारख संस्थान संत कबीर मार्ग, प्रीतम नगर, इलाहाबाद
3. कबीर की उलटवांसियां – अभिलाष दास, प्रकाशक – कबीर पारख संस्थान संत कबीर मार्ग, प्रीतम नगर, इलाहाबाद
4. लघु शोध प्रबंध – देवलाल साहू रायपुर जिले में अध्ययनरत् बी.एड. एवं पत्राचार बी.एड. छात्राध्यापकों की तार्किक क्षमता का अध्ययन, – पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. रायपुर छ.ग.